'युद्ध' कहानी में अभिव्यक्त मुस्लिम मानस

शोधार्थी

शिखा

हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

रामचन्द्र शुक्ल का कथन है – "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है ।"[i] फिर क्या कारण है कि हिन्दी साहित्य में मुस्लिम चेतना को किनारे करके देखा गया? मुस्लिम लेखकों द्वारा लिखे गए साहित्य, मुस्लिम समुदाय की चेतना को हिन्दी साहित्य के शीर्ष आलोचकों ने अपनी आलोचना के केंद्र में क्यों नही रखा? हिन्दू हो या मुसलमान दोनों धर्मों का हिन्दी साहित्य ,संस्कृति में अमिट योगदान है। अगर सम्पूर्ण भारत को जानना है तो एक धर्म को अनदेखा नहीं किया जा सकता। सत्ता की राजनीति और स्वार्थपरता के कारण दोनों धर्मों में निरंतर अलगाव उत्पन्न करने के प्रयास किए जा रहे हैं बिना यह सोचे समझे कि इससे आम जन पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

शानी एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से मुस्लिम वर्ग को चित्रित किया है। यह वर्ग अब तक हिंदी साहित्य में अनछुआ था। भारत- पाक विभाजन एक ऐसी घटना है जिसमें देशों को न सिर्फ राजनीतिक स्तर पर अपितु लोगों को मूल्यों, आदर्शों, प्रेम, यहाँ तक कि मानवीयता के स्तर पर भी बाँट दिया। ऐसे में भारत में रहते हुए अल्पसंख्यक वर्ग की चेतना को अभिव्यक्ति देना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। राष्ट्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, समस्याओं ने शानी को सोचने पर बाध्य कर दिया कि विभाजन की त्रासदी की पीड़ा आम मुस्लिम भारतीय को ही क्यों भुगतनी पड़ती है? उसकी अस्मिता, राष्ट्रीयता, मूल्यों, संवेदनाओं को ही कटघरे में क्यों खड़ा कर दिया जाता है?

शानी मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार से जुड़े कथाकार हैं। अपने परिवेश को अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर करना ही उनका ध्येय है। शानी ने अपनी कहानियों जैसे- 'जनाज़ा','एक कमरे का घर', 'एक नाव का यात्री' आदि में सामाजिक जीवन के कटु यथार्थ को बेबाक ढंग से प्रस्तुत किया है। विभाजन के पश्चात् भारतीय मानस में व्याप्त अंतर्विरोधों, तकलीफों, यातनाओं, विडंबनाओं, विसंगतियों को शानी ने अपने पात्रों और परिवेश के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनके अनुसार:-"सच्ची रचनाकारिता के लिए कथानक ज्यादातर अपने आसपास और अपने ही वर्ग से देखे जाने चाहिए। वैसे भी इस बात की जरूरत आज पहले से ज्यादा है,... व्यक्तिगत रूप से जहाँ तक मैं समझता हूँ अपने सारे आधुनिकीकरण के बावजूद इसमें बहुत कुछ ऐसा बचा रह जाता है जो घर, समाज, धर्म और इतिहास हमें विरासत में सौंपकर चुपचाप आगे बढ़ जाते हैं और जिनकी जड़ों की गहराई का कई बार हमें पता ही नहीं चलता।"[ii]

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें जिजीविषा है और स्वयं को जिलाए रखने के लिए मनुष्य निरंतर विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता है। संघर्ष की यही पीड़ा शानी के साहित्य में दृष्टव्य है। रिज़वी कहानी का ऐसा पात्र है जो मज़हब के कारण उत्पन्न अलगाव से ग्रस्त है और वह सोचने के लिए बाध्य है कि महत्वपूर्ण क्या है मनुष्य या धर्म? शानी अपनी कहानियों में इन्हीं प्रश्नों को ढूंढने का प्रयास करते हैं। वे उन परिस्थितियों को उजागर करते हैं जो मनुष्य की मनुष्यता, स्वतंत्रता, अधिकारों, को लील रही है और मनुष्य कुछ भी कर पाने में असमर्थ है।

भारत एक प्रजातांत्रिक गणराज्य है। मुसलमानों का भारतीय जीवन में बहुत महत्व है इसे झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि मुसलमानों के कारण ही धर्म, दर्शन, साहित्य और कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति हुई है। मुस्लिम और भारतीय संस्कृति के समन्वय के परिणाम स्वरुप ही हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन हुआ। हिंदी साहित्य के इतिहास के आदिकाल से ही अनेक मुसलमान कवियों और साहित्यकारों जैसे अमीर खुसरो, मुल्ला दाउद, शेखनवी, जायसी आदि ने हिन्दी भाषा और साहित्य की समृद्धि और अभिवृद्धि में अपना विशेष योगदान दिया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि में मुस्लिम जीवन और संस्कृति के अनेक पहलू हिंदी कहानी में देखने को मिलते हैं। जहाँ हिंदू और मुसलमानों पर परस्पर प्रेम, सौहार्द, भाईचारा था। दोनों का उद्देश्य अंग्रेजों से अपने मुल्क को आजाद कराना एवं शांति प्रेम की स्थापना करना था। किंतु बदलती हुई परिस्थितियों और देश विभाजन की घटना ने भारतीय मुसलमानों के लिए एक अजीब स्थिति और परिस्थितियां उत्पन्न कर दी। भारत- पाक विभाजन ने न सिर्फ दोनों देशों के मध्य तनाव और युद्ध की स्थिति उत्पन्न की। अपितु दोनों देशों की अस्मिता पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया। विभाजन के पश्चात् दोनों देशों के लोग एक- दूसरे को संशय व संदेह दृष्टि से देखने लगे जो कि मानव धरातल पर एक बहुत बड़ी विडंबनापूर्ण स्थिति है। शानी के शब्दों में -□ युद्ध छिड़ते ही शहर के मुसलमानों में जो आतंक और भय समा गया था उसका आवाज दफ्तरों में पा लेना सबसे ज्यादा आसान था। दो एक दिन हर क्षण यह लगता रहता था कि अब कोई दंगा हुआ अब कोई फसाद हुआ। दरअसल आम मुसलमान झाड़ियों में दुबके खरगोश की तरह अजीब सकते में डरा हुआ और चौकस हो गया था।□[iii] इसी विसंगति को 'मैला आँचल' में रेणु इस प्रकार लिखते हैं- □हम इस मुल्क में रहते हैं, जिसमें हमारी हैसियत दाल में नमक से ज्यादा नहीं है! एक बार अंग्रेजों का साया हटा हिंदू हमें खा जाएँगे।□[iv] भारत-पाक विभाजन में आम आदमी की स्थिति नगण्य थी, यह कार्य तो राजनीतिज्ञों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किए।

आधुनिक भारतीय समाज में इस समस्या को देखा जा सकता है कि यदि कहीं भी कोई दुर्घटना, आतंकवादी विस्फोट की घटना होती है तो संशय के दायरे में मुसलमान ही आते हैं चाहे उस घटना में मुसलमान शामिल हो या नहीं। इस संशय और संदेह का आधार

पूर्वाग्रह और वर्णगत संस्कार है जिससे कुछ व्यक्ति विशेष के कारण हर्जाना सभी व्यक्तियों को चुकाना पड़ता है। इसमें उन दयनीय, साधारण व्यक्तियों की क्या गलती है जो धर्म के नाम पर प्रताड़ित हो रहे हैं और वह चाहकर भी इस प्रताड़ना का विरोध कर पाने में अक्षम है। "रिज़वी से वह काम छीन लिया गया जो वह बरसों से करता आ रहा है। डायरेक्टर ने कहा कि हालात को देखते हुए ऐसा बड़ा काम रिज़वी पर छोड़ना ठीक नहीं ! सारे देश का मामला है।"[v]

युद्ध चाहे देश के नाम पर हो या जाति, लिंग, धर्म के नाम पर, युद्ध की विभीषिका प्रारंभ से ही मानवता के विरुद्ध रही है। युद्ध का सबसे अधिक प्रभाव मध्यमवर्ग पर पड़ता है उसे ही युद्धोपरांत समाज, राजनीति, धर्म आदि में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपताओं को झेलना पड़ता है। यह मध्य वर्ग की त्रासदी है कि वह इन प्रभावों,समस्याओं को झेलने के लिए अभिशप्त है। शानी के शब्दों में- " जिन हालात में मैं पला बढ़ा था उसमें लेखक होने के अलावा मेरे लिए निस्तार का कोई और रास्ता ही नहीं था। मैं कीचड़ पर बैठा हुआ कालीन के सपने देखता था... और जब वे टूटते थे तो उन तकलीफों से निजात की सूरत तलाश किया करता था- कहानियों में।"[vi] इस कहानी में प्रगतिशील कहलाने वाले भारतीय समाज की वास्तविकता को उद्घाटित किया गया है। जिसमें आज भी मजहब के नाम पर इंसान द्वारा इंसान का नाश किया जा रहा है। मजहब तो व्यक्ति को परस्पर प्रेम, सद्भावना, समानता का पाठ पढ़ाता है किंतु यहाँ मजहब के नाम पर ही रिज़वी को शांति से रहने नहीं दिया जा रहा है।उसकी भावनाओं ,अस्मिता को कहानी में आरंभा से अंत तक निरंतर कुचला जा रहा है। लेखक के शब्दों में –"सन्न सकता पल भर का जिसे तोड़ते हुए अंधेरे में से एक आवाज आई मार साले जासूस को। जासूस! जासूस!"[vii]

हिंसा एक दुष्प्रवृत्ति है, जिसके परिणाम संभवत: मानवीय जीवन के प्रतिकूल होते हैं। हिंसा के कारण ही कितने देश, घर-परिवार नष्ट हो जाते हैं। किन्तु न जाने यह हिंसा किस तरह समाप्त होगी। इस कहानी में व्याप्त हिंसा से सभी विचलित हैं साथ ही एक छोटा बच्चा अप्पू जिसे अभी तक युद्ध, वैमनस्य, जातिगत, धर्मगत भेदभाव का अर्थ भी नहीं पता वह भी प्रश्न करता है- "यह लड़ाई कब बंद होगी?"[viii] यह प्रश्न सिर्फ अप्पू का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव-जाति का जो सभी प्रकार के मतभेद, भेदभाव भूलकर प्रेमपूर्वक, भाईचारे के साथ अपना जीवन जीना चाहती है।

आज धर्म को आधार बनाकर जो मतभेद उत्पन्न किए जा रहे हैं । एक धर्म के लोगों लो दूसरे धर्म के विरुद्ध खड़ा करने की जो साजिश रची जा रही है उसके पीछे कुछ लोगों की स्वार्थपूर्ति और सत्ता पर काबिज रहने की लड़ाई है। महात्मा गाँधी ने जिस भारत की परिकल्पना की थी वह लोकतान्त्रिक, पंथनिरपेक्ष भारत था। किन्तु सत्ता की भूख ने आज मनुष्य को इस कद्र गिरा दिया है कि उनके लिए खून खराबा करना, दहशत गर्दी फैलाना आम बात हो गई है। धर्म व्यक्ति को परस्पर प्रेम, सद्भावना, एकता, समानता, बंधुता का पाठ पढ़ाता है। किन्तु उसी धर्म को ढाल बनाकर कुछ अवसरवादी लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करते

हैं अपने स्वार्थ मे धँसकर वे यहां तक भूल जाते हैं कि देश में निरंतर धर्म जाति व संप्रदाय को लेकर युद्ध करते रहने से युवा और बाल मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

डॉ विशन लाल गौड़ के अनुसार-"शानी जी की रचनाएं किंही मजहबी जज्बात को नहीं आदमियत को कुरेदती है।"[ix] शानी की कहानी में कराह, टीस, पीड़ा, जगह-जगह अभिव्यक्त हुई है किंतु यह अभिव्यक्ति कुंठा की नहीं आत्मिक पीड़ा की है। यह पीड़ा शानी की चेतना को झकझोरती है। यह उनकी मानवीयता उनकी आदमियत है। उनकी आदमियत की तलाश के एहसास को निरीह बाल -चेतना के सवाल में भी महसूस किया जा सकता है-" पापा हम हिंदू है या मुसलमान"[x]

अनुभव की प्रमाणिकता को शानी की कहानी के पौर-पौर में महसूस किया जा सकता है। पाठक अभिव्यक्ति पा रही ज़िंदगी के साथ लगाव के महसूस करता है क्योंकि उसमें एक ऐसे जीवन का चित्रण है जिसे अनेक विसंगतियों, कुंठाओं, आतंक, भय के बावजूद भी जिया जा रहा है "जिस जिंदगी को उन्होंने निकट से देखा है, जिसके दुखों को उन्होंने जाना है उसे अपने साहित्य में क्योंकर स्थान न दें... मुसलमान होने के नाते अपने सामाजिक जीवन में उन्हें जिस अपमान तथा विद्वेष का शिकार होना पड़ा, उसे वे अपनी रचनाओं में क्यों ना उठाएं?"[xi] उन्होंने हिंदी साहित्य में व्याप्त बहुत बड़ी दरिद्रता को खत्म कर दिया है जो हिंदी साहित्य में मुस्लिम जीवन के चित्रण न होने से बनी हुई थी। उन्होंने मुस्लिम समुदाय के जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है।

अस्मिता का प्रश्न आज एक बड़ा प्रश्न बन गया है और यदि व्यक्ति मुसलमान हो तो उसकी दशा समाज में और भी शोचनीय है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने व राष्ट्रीयता को दर्शाने के लिए मुसलमानों को बोर्ड भी लड़काना पड़ता है। उन्हें राष्ट्रीयता की अपीलें निकालनी पड़ती है और उन पर दस्तखत भी करने पड़ते हैं। रिज़वी एक ऐसी ही अपील पर दस्तखत करने से मना कर देता है क्योंकि वह अपनी अस्मिता पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाना चाहता।वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना चाहता है। अतः "उसने साफ कहा था मैं क्या बेईमान हूँ जो ईमानदारी का सबूत पेश करता फिरूँ।"[xii]

संदर्भ ग्रंथ सूची

---

[i] हिन्दी साहित्य का इतिहास –रामचन्द्र शुक्ल,नागरी प्रचारणी सभा, संस्करण 1999, पृ 1

[ii] शानी- मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एंड संस, संस्करण 1976,पृ-9

[iii] वही पृ-100

[iv] फणीश्वर नाथ 'रेणु'- मैला आँचल, वाणी प्रकाशन, पृ 260

[v] शानी- मेरी प्रिय कहानियाँ,पृ 100

[vi] वही पृ-5

[vii]वही पृ- 105

[viii] वही पृ-109

[ix]जानकी प्रसाद शर्मा शानी :आदमी और अदीब, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, संस्करण 1996, पृ 91

[x] शानी- मेरी प्रिय कहानियाँ,पृ 102

[xi] वही पृ-105

[xii]वीरेंद्र यादव- उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, राजकमल प्रकाशन,संस्करण 2009